

राज

**कॉमिक्स
विशेषांक**

मूल्य 25.00 रॉपया 137

कलियुग



नागराज, सुपर कमाण्डो ध्रुव और शक्ति

कहते हैं कि जब दो की लड़ाई होती है तो कायदा तीसरा उठाता है।... कोई यह भी कहता है कि दो बड़ों की लड़ाई में तीसरा छोटा घिसता है। लेकिन यह कायद ही कभी मुझा सखा हो कि दो बड़ों की लड़ाई का निर्णय कोई तीसरा छोटा करे—

लेकिन अविष्य के दुर्घटन में यही वृक्ष विस्तर रहा है। देवों के अनुसार मानवों की शक्ति ही देवताओं की शक्ति देती है। और इसी कारण देवों ने अविष्य के इस स्रोत को ही मृत्यु कागजों की दासनी है।... और वह समय है इस कास को अज्ञान देने का। क्योंकि देवों के तीसरे युद्ध सतपुरा, त्रेता और द्वापर के बाद अब दासों का युद्ध आया है। और दासों की शक्ति तब तक बढ़ी रहेगी, जब तक बड़ा रहेगा...

कलियुग

कथा: जौली सिन्हा
चित्र: अतुल सिन्हा

इंकिता: कांखले, विनोद कुमार ! सुलेख वंश: सुदीप पाण्डे

संपादक:
सतीश गुप्ता

विशाखर अपने काम में अंतर्गत हो गया। पृथ्वी पर हज़ारी जाल का अब स्वरूप राक्षस सिर्फ चंडकाल बना है। पर वह भी अपनी शाली के कारण अब विश्व शरीर के अटकता फिर रहा है। कलियुग लेडी से बीतना आ रहा है। और जिस युद्ध में हज़ारी शक्ति का खरब पर होती है, अब उसी युद्ध में इस देवताओं को हरा ले पासनी फिर सतपुरा में क्या बरामदों? ★



फिर इस क्या करें, असुरराज डोलक? सारा को हत वध तो आपसी में कर सकते हैं, पर इसने भीमव देवसुर संग्राम होने की आशंका है। यह युद्ध याह कलियुग हो, पर सारा की शक्ति अभी भी देवों के प्रति है, और इस कारण हत उन पर अभी नहीं पड़ सकते। ... वैसे तो इसको सारा के वध होने से कोई फायदा नहीं है। क्योंकि इसको तो उनकी शक्ति चाहिए।



उनकी शक्ति हमें तभी मिलेगी, जब वे दूसरी शक्ति को लगेगा। यही तो निश्चय कर रहा था। परन्तु असफल रहा। अब तो देवता ही सतर्क हो गए होंगे। हमारे सेने किसी भी प्रयास को बरिफल करने की दुरी कीशिश करेंगे।

... अगर अनुराग शक्ति का प्रयोग करना सिखल दें वत्स ...



--तो देवों की शक्ति का प्रयोग करो! उनकी ही शक्ति से उनके वध हो। क्योंकि अपनी शक्तियों की काट खुद उनके पास नहीं होगी!



सुखर शक्तिधर! सदैव की तरह आपका सुखर मेरी बुद्धि को पूर करता हुआ अन्त में चला गया है।

देवों की शक्ति का प्रयोग भूल हत कैसे कर सकते हैं!

देवों से अपने वरदानों के रूप में अपनी शक्तियों को सेने बांटा है, जैसे कुबेर सुद्रास बांटा फिरता है। वंश कि देवता स्वर्ग में वस सेने किसी प्राणी से, देवों की शक्ति छीन ली। फिर मैं इस शक्ति को सेना पर प्रकृत कर लेंगा कि देवता स्वर्ग में उसको काट नहीं पायेंगे।



औंह! इसके लिए हमको उन
सन्तों को बुढ़ता होना, जो देवों द्वारा
वर प्राप्त किए हुए हैं। और ऐसे लोगों
को बुढ़ता अथवा मुक्ति नहीं होना। क्योंकि
कल्पितुह से ऐसे अथवा ताव नहीं है।
परन्तु, उनका पना लवाकर उनमें इक्ति
घोलने का काम बहुत आसान से करना
पड़ता। क्योंकि हमारे ऐसा करने ही देव
हमको रोकने की कोशिश अवश्य
करेंगे।

कविपुत्र ने
ऐसे शब्द सचमुच
जिसे चुने ही हैं, जिसके अन्तर
देवों के आशीर्वाद के कारण इक्ति
है। और इनमें से एक है...

... नगराज -

तुम बहुत आगे की सोच रहे हो
अनुराज महाराज। पहले ऐसे शब्द से
बुढ़ा, और उनमें इक्ति घोलने के
लिए महाराज अनुरोधों
को देखो...

क्या हो सकता
है इसका
कारण?

... उसके पड़ान
आगे की योजना
बनाने हैं।

पिछले कुछ दिनों से अपराधों की
बारदाँनी से सन्तों का बड़ बड़ है, और
अपराधियों की हिरण्मत्त भी। सन्तों
से कहा हो गया कि इनका नगराज
फोड़ना और बचाना हो गया है ?

कुछ दिनों पहले तक तो पूरी दुनिया से ही हिंसा और अपराध बढ़ने की खबरें आ रही थीं। अब दुनिया का तो पता नहीं पर महाभारत में अभी भी ये घटनाएँ हुआ ही हैं कि मुझे और मेरे जानवर साथ की विश्वास ठगता रह सकें!

महाराज यह नहीं जानते थे कि अपराधों की इस बाढ़ का कारण शिवालय द्वारा अग्ने पौधे छोड़ दिया गया था—



और यह था, अभी भी पापी मानवों को सच को खतम करने की प्रेरणा दे रहा था—



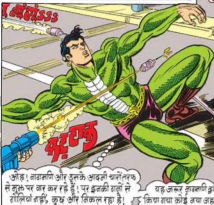
और हम— हम तरीके से मुक्त रहें—

तेरा काट करके का तरीका बड़ा बेरिडा है, महाराज! मुझे ज्ञान और आसून साथ अपराध होने देखते हैं, तुम्हें सन्देश लेजते हैं—



...और नु आ टपकता है, तुम्हें ज्ञान में फंसाते का इन्ते अट्टहा तरीका और क्या हो सकता है?







लेकिन साराज अपने शरीर पर पहने गले करने को बचाते का आदी नहीं था। कुछ दुर्कीले इशियनों ने अपना निशाना दृढ़ ही लिया-

ओय्यह! ये तो किसी किन्दा के इलेक्ट्रिक हैं! जलना को काव में करने वाले टैक्निकल इजिज डैटर्स की तरह!



तु सी तो एक जलन ही है साराज! एक इच्छाधरी साथ!



और अब ये 'स्टेडी वेज' तेरे शरीर में प्रवेश करके तेरे जहर को पत्ती बना रहा है। अब जल्दी ही तेरा जहर ही स्वतः ही जलना और उस जहर में पालने वाले तेरे मुझ तथा सी। फिर स्वतः होगी तेरी इजियन, और फिर स्वतः होगा तु!



कारण लाहलसि मरुत कह रहा है। मेरी विष फुंकार ने लकी कचे दो दूँओं को डेहोडा तो करे दिवा है, लेकिन इत बर न तो उससे पहले की तरह सा प्रेयन धा और व ही तीव्रता! क्या सचमुच मेरा जहर पायी वल रहा है?



शिर राधा लाहलसि! मैं इसी वकत का डुलत जर कर रहा था। अब मैं इस तलबन से मेरी डवेल काटूंगा, और नू कुछ वही कर पायगा।



लाहलसि को कुछ ही पलों में उलव मिल राधा-



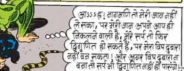
मुझे अपनी राहों में बढ़ते सांप भरते जाहनुस हो रहे हैं। साथ ही साथ मुझे कलजोरी भी लगर रही है, इनका सच ही अर्थ ही नकत है कि मेरा जहर सचमुच पायी वल रहा है!

और मेरा कितना जहर पायी वल रहा, यह 'स्टेडी वेज' की लुजा पर शिर करेगा, जो मेरे शरीर के अन्दर है!

सैन, वह साधा खाड़े जितली भी थी, फिलहाल तो मेरे मुक़्त सार सच होले के कारण मुझे इतली कलजोरी लग रही है कि मैं सबकुछ लकी ही पा रहा हूँ!

मैं फिलहाल अजिहाल ही लकी, पर मुझे सारदा अभी भी इतली अलान नहीं है। मेरे सारों को खिदा रहने के लिस मिले लकी मेरे जहर की लकरत पड़ती है, जब वे मुक़्त रूप में रहते हैं। इसीलिस मैं उनको मुक़्त रूप में रहने लकी दूँगा। तब लवे जरेगे...

सांय



कविपुत्र

... और मेरे शरीर के मुकुट सर्व मेरे विष में ही पलन सकते हैं।... विष की साखा अगर जलदी ही न बढ़ी तो कमजोरी के कारण मेरी वृद्ध वृत्ति भी रुक सकती है! ये विष तो मुझे देव कालजयी ही वरदान में दे सकते हैं। उनका ही ध्यान करना होगा!

साराज से देव कालजयी का ध्यान लवारा-



और कालजयी लपक उठे-

ओह! मेरा भक्त साराज मुझे पुकार रहा है। पर मैं उसकी मदद के लिए पृथ्वी पर नहीं जा सकता। क्योंकि देवराज को देवों पर देवियों के हज़ारों की आशंका है...

... और उन्होंने हर देवराज से हर समय स्वर्ग में ही उपस्थित रहने की कहा है। मैं उसकी आज्ञा मान कर पृथ्वी पर नहीं जा सकता।

साराज ओह! देव कालजयी! अब तक मेरी पुकार सुनकर अवश्य आ जाते। उनका न आना इस बात का संकेत है कि वह तो वे मेरी पुकार नहीं सुन पा रहे हैं, वह स्वर्ग आने में असमर्थ हैं!



ओह! साराज का सार्वभौमिक संकेत मेरे पल आ रहा है। साराज किसी सुनोवत में है! अपने आगो मेरे द्वार वहाँ पहुँचाना चाहता है। मैं उसे उन्ने दूर प्रेषित संकेत से वहाँ बुला भेजता हूँ।



अब मैं क्या करूँ? इस धरती पर तो देव कालजयी जैन विष मिल पाता असंभव है। यह द्विजालय की ऊँचाई धरत तक या सदासर्वों की वक्राई... ओह! सदासर्व!

एक स्थान है, जहाँ मेरे देव कालजयी का विष मिल सकता है। परन्तु इस अन्तर में मैं आने और वहाँ तक नहीं पहुँच सकता। मुझे सार्वभौमिक संकेत साधना होगा, साराज्य में...

... सदासर्व कालदूत से



सहायता कालदून दे अपनी नरेशों को प्रेषित करता शुरू कर दिया, और लाराज को इनके कर्णों में बदलकर लाराजीप स्थित मरुभूमि कालदून की राह में बिछाता शुरू हो गया-



कुछ ही पक्षों का जवाब देकर सदन की कार्यवाही की राफा में स्थगित हो-

अध्यापक डा. जय शर्मा :-



लवमाज, बलाओं
क्या ही राधा है जिसे
क्या ही लुकाई नेली
हानन ? कलाओं
लवमाज, बलाओं

आज, देव कालजयी हो और तुम्हारी
पुस्तक का उजवा लूनी दिखे। जब
सोई लौकी बिछा है, लकीरें लकीरें
पर तुम्हारे जिन जिन की जगह है,
वहाँ मैंने वे ही उमकते हैं।
हमने ही तुम्हारी वजह सब
कर सकता है ?

आपको वे 'जल' बाद होंगे महानगर
जलको रखने के बाद कुछ लवणीय
निर्माणों की सूर्य की लंबे हो, और जिस
द्वारा आपको वे जल के रहस्य का
पता चला था: यह है वे आपको ?

अरे हाँ! उस पौधों से तुम्हारे बाल-हाथी का वह अनिष्टकृत विष सेवै सिद्ध था, जिसके कारण तुम दूधित अवस्था में थे। वह अनिष्टकृत विष तो अभी भी उस पौधों के फलों में लौक्य है। मैं अभी तैयारता हूँ ये विशेष फल।





सैवलाह को लोहा? सैवलाह कली को ले, लार ले। फिर मत कहना कि अमर सौदा नहीं होने। पीछे से बर कराने हैं।

सिद्ध विष में बुझे लाले, उस जहर को देवलाह कली के डरार में तुलार देवे के लिए (नरक-)

और सैवलाह के डरार पर लिपटे रूप का मुँह खुलकर आश्चर्यजनक रूप से फैलने लगा—

शाले उस खुले हुए हैं धुलने वाले रंग—



अब जो बर काला हो करो, परसु सवले में गड़ने मुले लारपज से अबरप मिलन देना! अब तक लारपज से लारने नहीं आया, तब तक सेवा विधेन जारी रहेगा!

तड़कतड़क

दुस जमीन से टकराई—

और जब मुँह दोबारा खुला तो उसमें लोहा के बजाय कई शाले शिकल के लारपज के ग्रहणों की तरह लारके—

और आश्चर्यचकित लारपजों के डरारों की तरह— जवह से चोखने वाले लार—



हा हा हा! देना लेना तब मुस किमी भी बर को अरने लुह में बरद कर सकता है। और फिर उसको कई गुल वड़ाकर बड़ी बर बाधन कर सकता है।



और जमीन ओप उठी। भूकंप की लहरों पर लारपज से फैलने लगी—

तड़कतड़कतड़कतड़क

कंपल की बुद्ध तर्कों से जगन्नाथ
कालवृत्त की दुष्ट को भी हिला हल-

ये कंपल कैसे हुआ
मुक्ति आ रहा है?



तुम्हें, सद्गुरुदत्त! यह
कोई दूसरी सुनीवत लगती है;
वज्र में कोई अजुद्धवी शक्ति
तुम्हें पुकार रही है!

अभी देवराज है! अब कस
से कस तुम्हें रोकता होने की
शक्ति तो आ रही है! पर ये
सुनीवत आ कहां से आई?



देव कालजयी की
अस्मिता को कल कल-
राज! लो, अपनी
अस्मिता तुम्हें दे दे!
दे दे!



वज्रराज! अबला
तब तेरे जगद्गुरु सेना!

सदराज और कालजयीगुरुल
दुष्टा से वास्तविकता आन-



कौन है ये नृदुष्ट?
सदराज की कौन है
रक्षा है?

पहले बता! सदराज
कौन है? नृ तो नील निर-
वला है! सदराज को ही नहीं
सकता! सदराज तो सक-
लिर वाला है! हरीश्वर,
अरे! मैं देवराज काली की
कितनी सूर्य विकला! यही
नृ है सदराज!

प्राण तो मेरे विकला! असुर लेवल
हैं तुम्हें देवराज की पदचल हवा थकि
नृन: अनुर है! अरे अजुद्ध की
लारसे मैं कालवृत्त की सद्गुरुल
हसिल है!



कालावत है ओह, कुछ-कुछ घबराती आ रहा है। सुनने और श्रोताओं में जगमग करने लगी है। पक्षी का चिह्न बन कर आते थे। तो कई बार हुआ। सन्नाह निकलने हलकी लौटाया था। पर वह कुछ लगे सल्लू होत हुआ और नहीं आया। यह कविपुत्र है, और कविपुत्र में हलक नकलने की इच्छा हुआ। अतः ही हमने ही है कि, तब से ही दुष्ट-मुक्ति महाशक्ति हलक सन्नाह में लेता था। कलक कर, पर मेरे लय मुख के अंदर जाने ही मेरी इच्छियां बढ़ती शुरू हो आंसी।

[illegible]

संविधान की तरह ही कर्तव्य अमर पृथ्वी
के अन्तर्गत अन्तर्गत दिग्दर्शकों में अन्तर्गत
अन्तर्गत तब तक रहे थे—

आपने आज हम सबको
होने वाला कर दे धन्य जितने
मेरी छविनी है। अरु छविनी
आज कल के लिए मेरा
करने ही नहीं वचेर।





चौरंगा केदरीनाद जलन चौरंगा! ओहो
ओह केदरीनाद अब चौरंग होने
बन चौरंग कोय ठहरा है!

3331
3332

ओहो हा, इसकी चौरंग हो तो मेरे चौरंग
के हर अंग को झिला दिया है! और इस चौरंग
के कपड़ों से इसलोक के आँखें लक टपल
हैं। और प्लानेटर झड़कर फिर गड़ है!

इसका मुँह बंद करवा देंगे! लकी
इसकी चौरंग बंद हो जल-



और केदरीनाद का मुँह पिघलने लगे से
हर राख-



पर चौरंग नहीं रुकी! अब सिर्फ फर्क
इतना था कि वह चौरंग तेज सैदी के
स्थल पर लकड़ी बांधकर दहक लेवल
रही थी-

लकड़ी का दहक



और केदरीनाद की बर्बाद हो चक से जुड़ा
हो गई-



और लकड़वाला
गुंज उठा-

हा हा हा! अच्छा किया! बहुत
अच्छा किया! सब राखे-रखे
हारे कंधे बंद करने लगे थे! पर
अब न कंधा कसेरी! और चौरंग
की कैसे सेकेंगी? लोच, लोच,
नव लकड़वाले इसलोक में लकड़वाले!

ओह! अब चौरंग को
स्थायी रूप से ही रोकना पड़ेगा!

लोहा किन से हवा
में लपक गया-

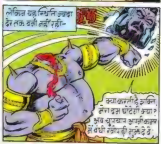




लोक के लोक खोल दे हवा में उड़कर—



तो फिर आली शौन का मासल करले की नैयार ही आ दुष्ट ! अब तुझे करस करले के अलावा और काहुँ नामन लही है।



और एक अकस्मि
कैदराना की ही थी-

दाहाहा!

असंभव! यह वही तो
सकल! जैसी प्रबल अस्ति मे कोई
मारी नहीं बच सकती। यह कोई
चल है। साध है राक्षसों की!

हमारी वस्तु- लवटुंग में-

लवटुंग में वस्तु नहीं है राक्षस!
हमारे जरीर के सारे अवयव हमारे
जरीर में नहीं हैं। पर हम जली ही
हमारे जरीर में हैं!

साधा हाही, यह मेरी अस्मिता
काय है अस्मिता! अस्मिता
हमारे जरीर में है हमारे जरीर में
अस्मिता अस्मिता लेज है। और
हमारे अस्मिता से हम अस्मिता
हैं, पर फिर जिन्दगी ही हमारे
हैं।

असंभव! यह लवटुंग पर
कहाँ वर कर रहा है!
और हम वर से में
कहाँ जरीर की जगह
में बदलकर ही
लवटुंग में
सकती!

क्योंकि जगह भी एक
ऊर्जा ही है। ऊर्जा वर हमारे
असंभव नहीं असंभव!

और हमको मुझकर
में जिन्दगी रहने के लिए
हमारे जरीर की अवयव-
काल ही चाहती है।

और मुझे जिन्दगी वर वगैरे!
मुझे वर वर करोगे तो मुझे वर वर करोगे!
असंभव, एक वर फिर देवता! देवता!

जैसे एक तेवर लड़ता हूँ। इसीलिए मुझे
रक्तस्राव से तुम लोगों से झिड़ने के लिए
सेना बना है। लोगों के अहंकार लवण
से झिड़ने के लिए।



तब तो तुम पर दूर
से ही धार करना होगा।

अब यह इसी से तुम पर धार—ओह!
और धार करो, झील लवणकुमार! और
धार करो! करते आओ!



लेकिन झील लवणकुमार के अगले
धार को तेवरलड़ने के लिये धार से
बुझ में रोक लिया—



तुम क्या कहता चाहते हो लवणकुमार?
कहाँ कहते हो कि धार लो करो, कहीं
कहते हो कि धार करो!

क्या धार
में?



धार सोचते, तेवरलड़ने वाली का धार
मुझ जैसे ही धार हुआ —
लवणकुमार ने उसको सोलवण कर दिया—

और लेवलवाली
नक़्क़ उठा-

आइस ह: यह शक्ति
तो बहुत मजबूत है। मेरा
सर्वसुख इसे खोल तो
सकता है, पर इसे खोलने
में समय लगता है। और
उसकी देर है तो इस खेल
का की बर्तन सर्वसुख में
द्विगुणित होगी ही जल्दी।
इसे विरुद्ध होने से रोक
सकते की बर्तन मेरे पास
है।...



...और सर्वसुख
मेरी कलकल
की शक्ति
लिख है।

वर्क विरुद्ध होने लगे, और
लेवलवाली की सर्वसुख
अपना ही चल गया। दुश्मन
ही चला गया-

और दुश्मन परियान
कहा होता था वह अंधका
महाका बुद्धिमान नहीं था-



महाका की बुद्धि के साथ सर्वसुख के विरुद्ध उठ खड़ा-

और लेवलवाली आज बकूला हो उठा-

तुम क्षुद्र लोगों की यह हिंसा,
मेरी सर्वसुख लाने का दिख। अब
देख लेवलवाली का कदम।

सर्वसुख

आइस ह!



आइस: यह तो मजबूत आक्रामक ही
उठा है। और मेरे ऊपर तो अभी और बुरा
लोगों की संख्या अतिशय रूप पर लगी पड़ रही है।

आइस तो क्या करे ?
कैसे लड़ दूँ कलकल की ? कैसे
लेवलवाली की ?

लेख, या तो ये सेवा खत्म
लेगा, या फिर पूरे सर्वसुख
के द्वारा अपनी सर्वसुख का मजबूत
कर देगा। मुझे खुद ही
बदला है, और सर्वसुख को
ही बचाव है।

ये दोनों काज तो मज
सुख कैसे... वह, एक
रामना है। जिससे यह
कर देगा। दोहों काज मजसुख ही
सकते हैं। और लेवलवाली
बली की बर्तन की किर
आ सकता है।



अपने ही चल,
सर्वसुख के सलीक से सार्वजनिक संकेत विकसित

पूरे सर्वसुख के कैलकुलेशन
सर्वसुख की कैलकुलेशन में
मजबूत सर्वसुख। यह चलेगा-





और थोड़ी ही देर बाद, पूरे हावड़ा के सभी बुराई धारी लोग, हावड़ा की नगर सड़क पर थे, और हावड़ा के ऊपर से प्रवेष्टा कर रहे थे-

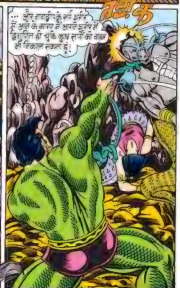
मेरे ऊपर के हावड़ा में मेरा सारा सारा, पर मेरा सारा पाकर हावड़ा के सारे मेरे ऊपर से प्रवेष्टा करने शुरू कर दिया है। और इस प्रकार से मेरे भी हावड़ा में आने और हावड़ा वसिरे की उम्मीद करी हावड़ा भी नहीं चलेगा यारों!



आज हावड़ा के नगर सड़क के निकल रहे हैं-

यार, मेरा हावड़ा! आज तो मेरा हावड़ा ही निकल रहा है। और मेरा हावड़ा ही निकल रहा है।

सब अब हावड़ा के सारे मेरे ऊपर से आ रहे हैं। हावड़ा में आ रहे हैं, और मेरे ऊपर से आ रहे हैं। और मेरे ऊपर से आ रहे हैं...



... और हावड़ा के सारे ऊपर से आ रहे हैं। और मेरे ऊपर से आ रहे हैं। और मेरे ऊपर से आ रहे हैं। और मेरे ऊपर से आ रहे हैं...



ओह! अब तक तो तेरे बड़ले
बुलंद लड़ रहे थे। अब तो खुद साबले
आ गया है। बहुत अच्छा। अब तेरा
सबत निकालता आता है
जोसदा।

जोसदा के हाथों से दोनों हथियार निकल- निकलकर जंगल की तरफ लगे लगे-

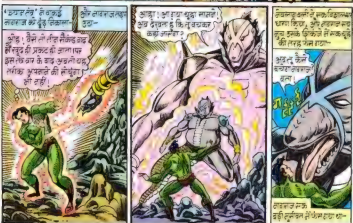
ये तेरा कन्ना
क्या निकल रहा है?



ये तो खुद तेरे जंगल के आ-
चार निकल जा रहे हैं!

सबसे जल्दी तो तुमसे बड़े
बुलंद अच्छा धरा निकल आ जायेगा
किया-

अरे! साबले
को हाथ? कन्ना
हाथ? रीत, जहाँ
है ही, तेरा
अपना तेरा बुलंद
दुंद निकलता-



'अपना तेरा' ते वकई
सबसे जल्दी बुलंद निकल-

और जंगल लड़ने
उठा-

ओह! तेरे तो तीव्र सैकंड बल
हैं खुद की प्रकृति की जाला। पर
इस तेरा बल के बल अब तो यह
लरीक भूखले की लोभुला
आ रही!

आह! आ गया खुदा साबले!
अब देखना है कि नु बचकर
कहाँ जायेगा?

जोसदा बली ते सब विहालकर
धरना किए, अब जंगल सब
लुप्त इसके फिकरे में तेक खुले
की लड़ने जल हाता-

अब तो कैसे
बचता जंगल
बना!

जोसदा तेरे
बड़ी लुभक में कैस हाता-

पर दूसरी लुमीन को डालता, उसा टेडी खीर खनित हो रहा था-

अच्छा! यही व अपने- अप
अपनी ड्रिजिनो मुझे लोदी ड्रिजिन
में ड्रिजिनो की आद लाय है। ये
सा पही। तेरी खोपड़ी में जिम सल
कंपर ही ड्रिजिन लगे हो रही है, यह
खोपड़ी तुनी कंपर पर खिर जिम
रक्त कुनो टुंग बनी है। मरफकी २ टुनी
नलकी। खीर... ड्रिजिन ललम लो कि ये
खोपड़ी तेरी ललम की खोपड़ी में लोके
बहाकर धीरे- धीरे तुनी ड्रिजिन टुंग
लेगी। वलुन हो ललकी खोपड़ी में से
तेरी ड्रिजिनो, और अकुर और अलसी
लेगी तुम खोपड़ी में!...



... और तब तक मेरी गुंड
खलका करनी रहेगी!

ओममम!
ड्रिजिनो खोपड़ी लो
मललुन मेरी ड्रिजिनो
की खीर रही है!

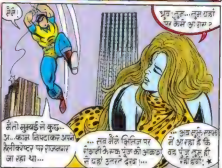
और ड्रिजिनो की खीर मुझे... मेरी ड्रिजिन ड्रिजिनो ने
लो मललुनो का लोके से खीर रही है कि से
दे रही है, और लोदी... अच्छा- अपकी प्रकाश
की ड्रिजिन लोपही में ओ वलम लोदी
का...

लेकिन ये कुछ पल बीतते से पहले ही
ड्रिजिनो खीर में लललल अलल-

अरे! यह क्या? मुझे
पर का करणे की
जिस्तम किलने
की?



कुछ ही पलों
में ड्रिजिनो की ड्रिजिनो खीर आली थी-



मैं तो सुखई ले कुछ--
अ... काज सिपटाकर अपने
लैकिपटर पर राजलगर
जा रहा था...

... तब मैंने किलिज पर
लेकरी के लक गुंड को अकड
में धक्का डलने देखा!...

... अब मुझे ललम
में आ रहा है कि
वद पून ललम
में ही बनी! *



लुनवई में भी मैं ऐसी ही कुछ मुनीकों में लिपट रहा था, जो संभव से पास को नासाउध कायम कल्ला चाहती थी।

पर इस लुनवई में कैसे लिपटें? इन पर तो ऐसे अनेक तरे का अजब कर देरद लिपट! कुंई अमर लड़ी लुंई इन पर! और— वरुं अपनी खोपड़ी फिर से डुल्ले के निपट दड रहा है!... ही ऐसा लड़ी खिंचे दूँ!

इन्ति की अलि लहर से खोपड़ा उडल का दूर तो आ गिरी, पर उसे लुललल लड़ी पड़ल सकी—



हा हा हा! यद खोपड़ी अल डकर है अलि, उसे कोई भी नाकल अल लड़ी कर सकती!

हैं इमे लल लड़ी कर सकलीं, पर नरे लुलल से पल्ले से रोक ले सकलीं हूँ!



अलि लहर ले कोलपर की लवक से सक लड्डा करल डल्ल कर दिवा, खोपड़ी उनके अलल धुलल लड़ी, और लड्डा फिर कोलपर से डवरी लल—

अवत अपनी खोपड़ी नक कोई पड़ल लड़ी सकल के डेरललव!



मुले अपनी खुपड़ी... अलल को बुल लिपट है अलि, सलले प्रचंड कपोंक अल के लललल ललल ललल... ललल...

केडरीलड के उल लल से अलि और भुल लेने को ही डलल ले उल दिव—

आलल! यली इलली सलले वली लललल है! और मैं इले रोक लड़ी पा रही हूँ!

मुले अलि: इलले पलल कि मैं ललली लल से वलल हो आके, लललली को विपलल कर सकलल अलल वली, पलली लललल अलल!

उज्जिन के हाथों की प्रशंसा करता, जहाँ से मैं लौटने के क्षणों को नहीं भूलूँ। तुमको विधायकता आता है जोड़ने लगे, और फिर वे कल तक रहते आकार लेते लगे-

तुमका ध्यान बंटता है उज्जिन! मेरे तक तुमका ध्यान कल तक नहीं रहता। 'पर तुमकी कम्पनी'। तुमका तुमको मैं तो सुबह सिल जाऊँ, पर मेरी कविताएँ तुम्हीं मिलेंगी।

तुम पर हमेशा रहता भूत।



मेरी तरफ देख, कैहरिलद! देख!



मैं तो मेरी ही तरफ देख रहा हूँ तुमको, परन्तु अपनी सोच की तरफ देख रहा हूँ।

येय हो जाऊनेके बिना- आइस। उसे 'सूची' ठहरी। फोटाइक कहने हैं। सोचो अंतर्गत। ए... यह क्या चमत्कार? तब हाथ में सूची करने आ गया?

मैंने तो अपने हाथ को ही मारा। मुझे तो पता ही नहीं कि ये सूची जैसा चमत्कार है या चोट जैसा। परन्तु मेरे हाथ परों के सिवा अरुण ही रहा है।



अरुण ही नहीं। पर हाँ हाँ तो नहीं हुआ है त? ले लेगी चीय सूची, सूच मेरा लड़।

कैहरिलद तुम लोहे की चपरा को धँस दिख पाओ, ओ तुमकी बाल में आ रही थी-

और लोहे की चपराँ अब कैहरिलद को खरी तरफ से घेर चुकी थी-



लेकिन भूत की धमक नहीं देय पाया-

क्योंकि कैहरिलद के लड़ ते तुमको उठाकर दूर फेंक दिया था-



कैहरिलद घबरावत की आ रहा था-

पूरे दिल्ली की कुम्हारों अब खेत में कोयलें लगी थीं-

मिर्क भूत बरती।

और उज्जिन ने इस निर्दोष कार्य को पूरा करने में एक पल भी व्यर्थ नहीं किया-



कैहरिलद की चीय अब भी जारी थी-

पर अब इसकी चीरें, बिकली की बीकरी को नहीं, बल्कि तुलसी के पत्तों-पत्रों से दही बीवरों को कंपा रही थी, जो इसकी चीरों की छवि तरंगों को परावर्तित करके उसी के पास वापस भेज रही थी—



और इसी प्रचंड ध्वनि कुर्जा का इतल धुट से इसकी से निरुद्ध जल वह प्रलयकारी असर पैदा कर रहा था—

कारण था, और बहुत खतरनाक कारण था। बाइबीप से यह रवदी रवाना हुनी 'खतरनाक-कारण' के कारण रवाना जरूर था—

जिसे काट पत्र केहर लड़ को कलना से बाहर की बात थी—

आह! लाल धरती को क्यू, जैने दुन्दुभल लक केप डक है, तुम्हारे कथ, सोन लक धरपा रही है। अब से कुछ नहीं कर सकत, मित्रय यहाँ से दूर प्रेषित होकर अमुराज होशुक के कोप का ललक करत है।



अपनी ही पल कहानील अदृश्य हो चुका था—

यह... यह कहाँ गायब हो गया ?

हमारे घर से परामन होकर बाल अमुराज की यात्रा लपक कर भागी हुई। सुझसे उनकी धोखे में था, पर उनके वीर की अला यह रहा है इसी।



परमन ये लुप्त हो गइल तो मेरे क्या हुआ था, कोई फुला वृक्ष तो भी नहीं है ?

सुझा और अमुराज की दुन्दुभली प्रेमकहनी भी फुलती है धुव।

परमन केहलियत से मेरी कोई वृक्ष तो नहीं है। मैं खुद नहीं जानती कि इस घटना का कारण क्या है ?

आह! अगर मेरी इच्छा थी कल्लि बूझ न हो गई होती, तो आज मैं इस विशाल केवला का सारा आसानी से काट सकता था... पर यह सोच से अब क्या फायदा, वह खोई इच्छाधारी कल्लि वपन तो आते से रही...सक विरप, मेरे अन्दर इस वक्त भीया इच्छाधारी कल्लि है, लर, और मैं से घस हर शत्रु के अन्ध धोई इच्छाधारी कल्लि है, अतः व यह कल्लि बुझ दे, नी वह धोई-धोई कल्लि जिनका भीया इच्छाधारी कल्लि वह जानवी, उनी समीचा से साविक सेवक करत है। *



अहा! अब तेरे सारे वर मुझे लगे लग रहे हैं, जैसे यह हाथी पर बल जटकर है।



अब नु अबले आरको
हृष्ट ससज्जत के नो मुने
आयन नोए ससज्जत के कसत
होरी! ...

... हावराज के ससज्जत हृष्टधारी
सस्ये! अण्ठो हृष्टधारी हृष्टिने
नोए हृष्टिने में सधज्जतन कर
हो!

हावराज की सिके सस्ये रूप में बदल सकने की हृष्टधारी
शक्ति के साथ हावराज को सस्ये हृष्टधारी सस्यो की
हृष्टधारी शक्ति भी मिलने लगी —

और हावराज ने विकाल हृष्टधारी रूप धारण करना शुरू कर दिया
अब देखने हैं तेजसाज, कि
तु मेरा हृष्टन सिके सस्ये है, या
ही मेरी जल सिके सस्ये
है!



आइसक्रीम, नुस्के लड्डू के चक्कर
लॉमें भूख की वजह धाकि मेरा गहना
कास मेरा रक्त निकल रहा है। नुस्के
लड्डू लड्डू।

अब मेरे अन्दर लाल-
सुप के लाल धलकती
हवा की छलियाँ हों
हैं। अब मेरे में हल
पर अमर हवा
करीब!

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

... ताकि अगले ही पल मैं
अपना विशालकाय आकार
छिड़कर सब सरासन जिला
आकार में आ जाऊँ!...

... और जिन सचमुच की
हैं वे सब मेरा सख्त हैं जड़े।

पञ्चमः आह्वयः
मन्त्रः पौर्णमी-
॥

अब मैं कहूँ—यह सब
मेरे नतीजे हैं ? मेरे जीवन
में ऐसा उत्पन्न हो रहा है !
और... और ऐसा जीवन
7 बन रहा है !

पर कोई काम नहीं। मैं
हम से ही नहीं पिकन आया हूँ।
दोस्तों! फिर जिसका ही नहीं।

ਜੇਕਰ ਕੋਈ
ਨਾਮ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ
ਕਿਸੇ ਨਿਰੰਕਾਰ ਦੇ
ਨਾਮ -

मेरी काज हो गया
लवणक, मेरी काज
की नक बूँद में जल अम
काल में अमली है... का
है, पर तुमसे लाइते
बड़ा सज अम। नवर
मुँही वरती तो हाथ
विन कही तुलाकाज
हो जाय।

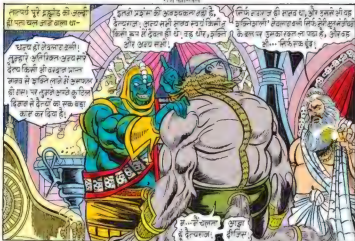
यह तो अचूक
ही रहा है। पर मैं
नक बंदूकमल से ये
क्या कर रहा? और
'चुली कली' से
कुम्हका क्या मतलब
था ?

लालपर्व पुरे इन्द्राक्ष को जल्दी ही पता चल जाये वाला था-

इतनी प्रशंसा की अब इन्द्राक्ष लक्ष्मी है, देवराज!। अतएव सभी सारथ स्वर्ण किन्नीर किसी रूप में देवता ही थे। वह धीरे, दक्षिण और अग्रिम सही।

सिद्धि लालपर्व ही सारथ था, और तुमने भी वह इन्द्राक्षाली! देवराज! सभी सिद्धि लालपर्व ही के बल पर तुमका रक्त ला पाया है, और वह ही... सिद्धि लालपर्व!

धन्य हो लेवराज! तुम्हारे अनिश्चित अग्रिम सारथ किसी भी वस्तुतः ज्ञान सारथ में इन्द्राक्ष लालपर्व ही सारथ! पर तुमने अपने कृपित दिवस में देवता को एक बड़ा काह कर दिया है!



स...ले चलता है देवराज! आइया दीक्षित

पर सिद्धि लालपर्व रक्त से आप क्या कर सकते हैं? बुद्धि देव?

अब तुम्हारे राजा पृथ्वी पर हम धीरे धीरे हर वस्तुतः ज्ञान सारथ की इन्द्राक्षों का अग्रिम कर रहा था। देव कालपर्वी के अग्रिम लालपर्व उस रक्त में वह इन्द्राक्ष इन्द्राक्ष है, जिससे देवराज के इन्द्राक्ष में स्थित बुद्धि लालपर्व इन्द्राक्ष लालपर्व है। मैं इन्द्राक्ष लालपर्व इन्द्राक्ष लालपर्व रक्त बुद्धि से अग्रिम कर रहा!



और फिर उस 'दिव्य इन्द्राक्ष' को एक लालपर्व देकर उसे एक देवता के इन्द्राक्ष में पहुँचा देता!

देवता के इन्द्राक्ष में? पर किस देवता के इन्द्राक्ष में? और हम उस देवता तक पहुँचने कैसे? देवता में अग्रिम हमने सारथ लालपर्व है। और अतएव वह इन्द्राक्ष किसी देव के इन्द्राक्ष में पहुँचा ही नहीं जा सकता है? तुमसे क्या होगा?



हां, जैसा, जैसा! वन, इन्द्राक्ष लालपर्व लालपर्व का उग्र सिद्धि, कि वह देवता, देवराज इन्द्राक्ष को पुर जल्दी ही मिलेगा! जय है, और तुमने युद्ध का हीनक इन्द्राक्ष है!

...अमर गुणधरी के अमर
जयंत तक रांधरी के प्यार से पालन हुआ
पाया है। और अपने मिल देवराज हनु के
हृ के कारण उससे छिप-छिपकर मिलता है।
और होने कारण जब वह रांधरी के साथ होता
है तो कोई भी देवराज उसके साथ नहीं
होता। और वही वकाल होता उसके ऊपर
से देवों की ही इस इच्छा को प्रवेक
कराने का।



परवतु तनी-

सह! अमरों के दुखत देवों
के राज के पुत्र जयंत! सह!

वह संधान, उड़ी देवता रहने हैं
और जिसे साहज अपना जयंत
हैं "सर्व" कहते हैं। वही की
रुक मुद्राकर सोना पर-



मेरा सत्यत देवराज से नहीं, वरुकि
अमरों से है जयंत? तुमको अमरों का ही भय नहीं है?



अरे, जब देवराज हनु की यह
पना नहीं मना कि मैं यहाँ आता हूँ
तो अमरों को कैसे पना लवोया?

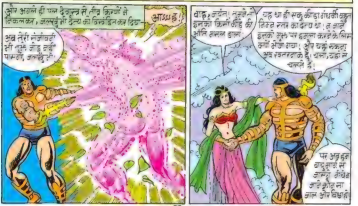
छोड़ी यह लया! आउने,
आज से बैठने हैं!

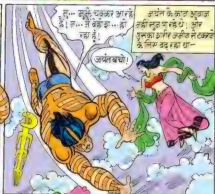


अरिषषष

जयंत! वही, अमरों
के अमर तक जयंतुने
देव छिप बैठ है!







आपकी इन सफलताओं में
अमर कुल उठे हैं-

सफलता में हमारे कदम पुनः
जिन हैं अमर राजा के, अब जो
सुखी सजाओ, और पूरे विश्व पर
राज्य करने की तैयारी करें।

है दुःख का हाथ



सुनें तो कुछ लड़कों
ने लड़ी का रहा है। जयंत के बेटों का
होने का संबंध कलियुग की अवधि में
होने है? कुछ सलाहें हमें मिलीं।

सर्वा की लड़ाई के
और घटनाक्रम वही मिले
ने वाला रहा था-



सलाहों में कुछ सलाहें हैं जो
आज सलाहों के दिवस में आते हैं, सब
आपने आज सलाह में आ जायें।

अरे! अगर मैं जयंत पर
मकड़माली सलामत दूना करूँ
तो इस दुनिया पर राज्य कर सकूँ
यह तो दुनिया के राजाओं में
महान की तरह अवसर कल है।

जयंत मैं वेदों का है,
दुल लड़ी है। और वह मे
दुल ही लड़ी सकल,
उत्तम, उत्तम ही लड़ी
विश्व का है।

मकड़माली को
के राक्षस का वार लेते वें
वेदों का लड़ी कर सकल
जय है तुम वृद्धपति।



हमारे जयंत में तुमने सलामत
दुल लड़ी का आलम ही रहा
है। और आप वही करण-

हमारे सलाहें सलामत लड़ी है, अमर राजा।
हमारे धर्म के कलियुग की अवधि का अवसर कल
मक के लिस बढ़ा देना। मकड़माली कलियुग
वृद्धपति की जय, और वेदों की जय
विश्व होनी जान।



मैं कुछ करण दूक देव।
हमारे जयंत का वृद्धपति सलामत।
वृद्ध अवधि ही जानवा।

जयन्त का जन्म वदना ही का रहा था। और देवता वृद्धमन्त्री उसे गोकुल की पूर्ण कोटि का कह रहे थे-



लेकिन उनकी कोशिशों का फल सिद्ध हो नहीं था-

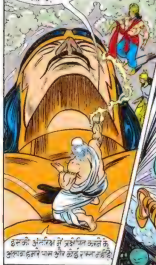
महर्षि, वृद्ध: ये हमारा वदना गोकुल नहीं था। वदना तो इस पर देवों की ही किन्ती जन्म का घर किया है। और इस देवों की इच्छा तो काट सकता है। पर इसने नाम अपने इच्छा की काट नहीं है।

अब तो स्वर्ग भी हमारे वदना में काटने लगा है। वदना ही चाही वह पूरा स्वर्ग ही ध्वस्त हो जलना।

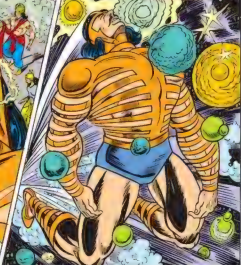
देवों से अपने मादृहिक इच्छा का प्रवेश करने जयन्त के ही विचार जन्म को अन्तर्गत में लेज दिया-

स्वर्ग तो अभी भी स्वर्ग से पूरी तरह बच नहीं पाया था-

लेकिन स्वर्ग बचने की चेष्टा ही हमारे पूरे प्रकाश पर इस स्वर्ग से जला दिया था-



हमारी अन्तर्गत में प्रवेश करने के अन्तर्गत हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है।



और ब्रह्मांड पर काल खमरा हर विली
क्षण के साथ और फैलता आ रहा था-



देखा उसका अंशक २ हीक वेस
ही हो रहा है, जेन मैरी सोचा था।
तुम्हीं ते अंश को ब्रह्मांड के केंद्र में
मेरी के लिस छोड़ दिया है। अब इनका
अंश बढ़ता जा रहा, और तुम सबका
विशाल अंश को ब्रह्मांड का केंद्र
अधिक हो जा रहा कि ब्रह्मांड के हर
पिंड, ग्रह या तारे सबके घूमने की गति
कहा जाती जा रही और इस कारण दिन
और रातों की अवधि बढ़ जा रही। सारों की
अवधि बढ़ जा रही। इलाकियों की अवधि
बढ़ जा रही और पृथ्वी की अवधि भी बढ़
जा रही। और फिर पृथ्वी जैसे ग्रहों की
घूर्णन गति सबका बढ़ता हो जा रही और
इससे पृथ्वी कालियुग की अवधि अंश
समय के लिस बढ़ जा रही। इन्हीं के
लिस ब्रह्मांड में बढ़ता हो जा रहा कालियुग
और फिर अपनी बड़ी अवधि में इस ब्रह्मांड
पर राज्य करने लगेगा।

पर आते अंश पर मेरी
कोल भी अंश में तर कर दिया
जो उसे बढ़ाती जा रही है?



तुमको राजा की वह 'रत्न दंड' ले
याद है न, जिसे लेखक वाली लाया था,
जैसे उस रत्न से मेरे मरी की द्रिगुणित
करने वाला इन्जिन की अलगा करके उसे
इसरी की कोशिकाओं का द्रिगुणित करने
वाली इन्जिन में परिवर्तित कर दिया था।
अब वही देव कुलजयी की इन्जिन
जुगल के इसरी की कोशिकाओं को
द्रिगुणित करके उसे बदला जा
रही है।

ओह! तब तो आपने
राजिन सेजकर जयन पर
हलका करवाते की पेशावी
बेकार ही रह गई। इस इन्जिन
को तो बड़ा किसी सक्षम
के इसरी में ही प्रविष्ट
करा सकते थे।

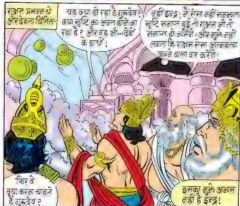


ओह! इसीलिए मैं तुम्हें कोई बात
कही जाता हूँ। जो बात को पकड़
कर तुम्हें सज्जनदारी की राह में हटाकर
बेवकूफी की राह पर ले जाता है। अरे,
अब कोई सक्षम यह विचार क्या धारण
करता जाता तो क्या देखता उसे काटकर
फेंक लही दते।

लेकिन जयन
में इन्जिन काट
है, तुम्हें बेवकूफी
काट सकते
हैं?

ही ही ही, लही काट
सकते, उह नी बदला ही
रहे ह, बदला ही रहेगा।

तुम्हें किस जयाज का बुरा
देव? मैं सचमुच तुम्हें हूँ।
आपकी बात लही सज्जनदारी



राजिन प्रसन्न थे
और देवता धिगिल-
यह क्या हो रहा है गुलबर्ग?
क्या मृष्टि का अवन होने का
रहा है? और वह भी... देवों
के हाथों!

सूरी इन्द्र: मैं ऐसा लही सज्जनदारी
मृष्टि सज्जन बड़े तो राजिन ही तो
सज्जन ही जमीनों! अब मुझे लही
लवना कि राजिन सेना कुलबर्ग
जाने वाला कर करेगा।

किर वे
सुना करत कहने
है गुलबर्ग?

हमका दुर्ग अवन
कही है इन्द्र!



'पंचगु राजनी के पाल देवों की इन्जिनो
की काट है। इस इन्जिन की काट भी उसके
पल देवों। क्योंकि यह ही देव का जयाज
की इन्जिन है।

देव का-
जयी की
इन्जिन?

ही! जैसे इसका पल लाहा लिया था।
अब जैसे ही राजनी को इन्द्रा युग हो
जाम्हा, वे जयन का बदला लेके देवों।



यह राजा का दुःख क्या है, यह हमको नहीं पता!

हमारे कुछ ही हैं, पर एक बात हमें नकदम नहीं छोड़ी है। इन अस्त्रों की काट राजाओं के पास अवश्य होती है। इन पर हमला करने वह काट चीनली होती। वैसे भी अस्त्रों पर हमला करने इन लोगों ने ही इन युद्ध की पहल की है।



मही दुःख! धन तो यह कल्पित है। अगर अस्त्र अस्त्रों से हताक युद्ध हुआ तो जीतने की संभावना कम और हारने की ज्यादा है। कैसे ही युद्ध में बहुत समय लगेगा, और इनसे सैन्य हमारे पास नहीं है।

तो फिर अब हम क्या करें, युद्ध बृहस्पति?

सक ही बनने है...

... हमको ज्ञानकायपुंज बना होना है...

ज्ञानकायपुंज पर... पर...



परन्तु वह तो परम अस्त्र सहायक के अर्थ में बना रहता है। वह सत्य है कि युद्ध की अस्त्र किसी भी अस्त्र अस्त्रों या देवों अस्त्रों को काट सकती है, परन्तु सहायक के अर्थ में अस्त्रों का ज्ञान ही विधि है। और देवताओं का ज्ञान ही। वहाँ पर जो कर्म हमारे अस्त्रों के अर्थ में ही तो बन नहीं आता... और जिस परम अस्त्र सहायक के अर्थ में, विष्णु और सृष्टि जैसे देवताओं की अस्त्रों ही हैं, उनके विधि अर्थ में हम ज्ञान कैसे आ सकते हैं?

हम नहीं आ सकते और न ही असुर। यह ही हमारे दुःखों में निहित हुआ है, और यह विष्णु हम ज्ञानों की सहायक के लिए ही है। परन्तु एक ज्ञान के बारे में कुछ नहीं निश्चय होना है।

सावध! दो दुःख, सावध! जो कालदेव और असुर नहीं कर सकते, सावध! जो कालदेव और असुर नहीं कर सकते, सावध! जो कालदेव और असुर नहीं कर सकते। सत्य ही पहली ही कई बार देवताओं की सहायक की है, सत्य ही सृष्टि और ज्ञान के लिए, सावध! जो कालदेव और असुर नहीं कर सकते। कल्पित ही दो सत्य ही एक सत्य ही सत्य है, जो कालदेव और असुर नहीं कर सकते। और सत्य ही सत्य ही सत्य है, जो कालदेव और असुर नहीं कर सकते।



मैं अस्त्रों का नाम अस्त्रों का वह काट सौंपनी है दुःख पर, वह सत्य सत्यों को अवश्य दृष्टि निकालेगी।

हीन है काली, पर ज्ञानी काल। हमारे पास अधिक समय नहीं है।

वाचस्पत्यम्—

ओह! अब जाकर मेरे
अरिहों में विष्णु का स्वरूप
साक्षात्कार हो गया है, और
मुझसे सभी की लेखना
हो! अब मैं विश्वकुल
टीक लहनुम का
रहूँ!

तुमने क्या नुक़स
मर्षी के अघरी बूढ़ि और
हसारी मदद के बल पर
रुस इन्ति जाली
नुक़स के परामन
कर दिण।

पुनर्वसु अथवा यह वा
कीर्ति और गङ्गा किनारे
अन्य स्थानों पर वैसा ही?

उनके जिसे मैंने आप सब की इच्छाधारी
इच्छा का सक् छोटा छोटा अंक भुले पान
की सब श्रेष्ठ है। वह फिल इल सेमि फिली
डैम से शिपट से के लिए पर्याप्त है। मैंने
है कि आप लोग की इस इच्छाधारी अक्षि
वही बहुत दिक्कत सहस्रम अक्षि। यह न
वह करती है कि मैंने फिली स्थिति के सब
होने का अन्तर्गत मिले की है यह इच्छा
अन्तर्गत कर देता।

सुले आप सबमें हमें
सबसे की आका थी।
अब मैं धारम लहालहा
जला बाहला हूँ।

अरे! यह क्या है?

साहसिकता का दर्शन एक
समकालीन उन्निपत्र में प्रकाश

और अन्तर्गत ही एक तत्त्वज्ञान
उक्त अन्तर्गत ही एक तत्त्वज्ञान
निरूपित है। उक्त अन्तर्गत ही

य... यहाँ क्या हो रहा है ? ल... लो कहो आ रहा हूँ !

बच्चों को अक्सर केवल छोटे अंश के बिना हम सब से लड़ी बचल पसंदी लभाल: पर तुम्हारी जान की रक्षित है यह कष्ट उठाते को सहन लेना है।

सहस्रों को जल्दी ही इन सड़न का जवाब दिये जाये।



हाहाहा! दुनिया की क्या बात! अब तक बस-बस तो दुनिया की क्या ही चक्के हीं नुहा! हाहा, अब नुहा त हीने तो इन दुनिया के चक्के का क्या होगा!

अब आते क्या करेंगे? अब नीचे आकर तो क्या करेंगे? यही तो दुनिया की क्या बात! अब तो नीचे आकर तो क्या करेंगे? अब तो नीचे आकर तो क्या करेंगे?



क्या आप सुनने ही नहीं करते! मकड़स दीप जलना! हाहाहा!

जुलना यह तरीका नहीं थी कि बीजने-बीजने ही उनकी बात सच होने जरूरी थी-

हं हं हं हं

अरे! यह क्या हो रहा है? तजाले कहीं से रोडाले का लकवाला भुकर मुझे अपनी आंखों में ले रहा है!...



... और दुनिया उठा कर त आते कहां से जा रहा है!

आँख! मुझे तो ये तो बंद करवा दिया!

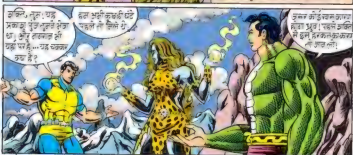
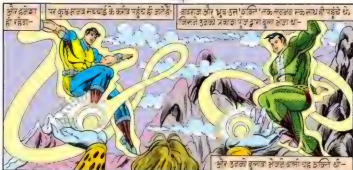


पर मकड़स है अंधा... अरे! अंधा का क्या सच? मकड़स है मुझे ऐसा नहीं मकड़! वह मकड़स नहीं कि तें लज्जत कर रही थी!...



— पर इस मकड़स में थोड़ा थोड़ा सच भी था। मुझे पुरा पता है कि अगर सच में कहीं देखा मुझे की सचों की सच की उभारत पड़ी तो वे अंधा की ही दुनिया में पर देवता कुछ होने की है या नहीं?

यह बात तो सच के बिना तो इसे ही मकड़स-



दूसः काका तो पना-पना बचा-कामि!
पर तो कुल प्रलयकारी सुमेधन का
सिंहका जेमे हो सकता है? देवता लौटने
जाते हैं कि इनका पुत्र कहां पर है?
किर से खुद ही सुलनाकर हम सुमेधन
का सिंहरा क्यों नहीं कर लेते?

क्योंकि वह हम परशुमणि के
शेखर में बसा है, जिनसे हल देवताओं
की ओर इच्छित प्रदाय की है। और
हमको श्रेष्ठ से देवताओं का प्रसिद्ध
और विषय है, और दानों का भी।
पर हाथों के बारे में कुछ नहीं कहें
कहा गया है। इसलिए हम देवताओं
की सहायता है कि हाथ परशु-
मणि के शेर में जाकर जाने
का पुत्र ला सका है।

वज्रनाथ की हम अभिषेक पर अंगरे केमिन् सुतेके का हमने
बड़ा काम तो पड़ी है कि क्यों पर हमी की अभिषेक का हम
वरा है। नाराही साथ हमने और अनुमन इच्छितों के शेर को अने
सबे साथ इच्छित की है। मन्त्र परशुमणि के शेर को अने
बला बला अनुमन में शेरकर आता है। अनुमन, बड़ी पर
जते जाने किसी भी जगह को जेके की की-छिन्न कुछ-छत्र
होते। इसलिए वज्रनाथ है कि कल में जल दो सलकों का
हम अभिषेक पर लेजा आते। और इसके लिए हमने
अच्छा सबब कहा सिन सकता है, जिनसे अभी कुछ-छत्र
परशुमन बला बला बला की बड़ी भलाही में सेरे हाथों
परशुमन करवा दिया, और जो सलकाप मेंन हाथों है जिनसे
हाथों कुली की अभिषेक वला इच्छित है जो सल
सबब है। अब बलाओ, नर-देवी हम अभिषेक पर
जते के लिए सलका ही या नहीं? *



सलका, पर हाथ-छत्र और
नुराही साथ में कहा पर छिन्न
होना है इच्छित?



हम सलका है इच्छित।
पर सुने हम दान की सलका
वला बला बला बला है कि
हम भुम्मी को जल दे सकेंगे

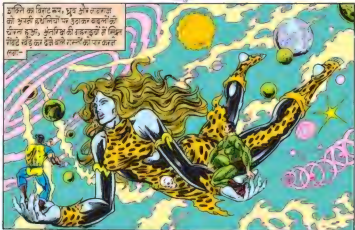
इच्छित की या व ही धूक
सिके पड़ी सलका बला है,
पु सुलको बला के का बला
देवता लौटने के अनुमन
और जो देवता लौटने
सलका, और हमने सलका
सिंहका हाथ जलका।

आजो, जेरे
हाथों पर छत्र
जालो

इच्छित से सिंहाद बर धारा बला
कल कर दिया—



इन्डिग को विनाश कर, ध्रुव और लवंगल को अपनी हथेलियों पर उठाकर सबलों को चरमन हुआ, अंतरिक्ष की राहगुड़ों में बिखर गिरते खंडों का दौने वाले सबलों को पार करते लगे।



कलाल है इन्डिग। इन्हें अंतरिक्ष से अखंड मोम केने की जगहान बहसुस लगी हो रही। वकन ललिकाओं पर कोई डरनाक और लगी खुद रहा। और हल दल की कर सजाने है।

ये इन्डिग नुल लोगों को सेले ही की है ध्रुव, लवंग और अमरुलोक के दलबग में विचरना करने के लिए ये इन्डिग अवसरक है।



ये इन्डिग नुल लोगों पृथ्वी पर वापस पहुंचाने ही अमरुलोक नुल नुलाने हो सकेगी। पर इनसे अधिक इन्डिग नुल नुलाने की लगी दिला सकती। क्योंकि ये नुल को अमरुलोक के उन सबने पर जाने से रोकेगी, जो सब इन्डिग के अंतरिक्ष जाते है। अमरुलोक ये उस सबने पर सेले इन्डिग अंतरिक्ष लुका रहे हैं, जो देव इन्डिग को नुलाने हैं। ये भी उन सबने पर अमरुलोक की कर सकती।

तो देवों। सब ने लुका नुलाने।

ये अवसर।

समस्या बहुत गंभीर है अजिने।
अब हमें नके पास ही बैठना पड़ेगा।
तुम हमें सस्ता दिखाओ, हम लाने में
आनन्द पाएंगे।

आओ! हमें ही अजिने की मदद में तुम दोनों
में माधु अंतर्गत में मेरे भी सकते हो। मेरे पक्ष
में आ जाओ।

सब दुष्कर पड़ा अंतर्गत हो गई थी-



मैं अजिने विरट बाग ही
न्याय नहीं हूँ। तुम दोनों की दुम अंतर्गत में
जाते के बाद अब उसकी जमानत नहीं है।

और हम पड़ा की समस्या
क हने में देने की नेचिने की ही-

कहा? बहुत से तुम दोनों की
सदर की है? और हमें से सब
सादर नहीं है, जिसमें कालजो
की शामिल थी। पर वे सब
हमारे ही अंतर्गत नहीं सकते। और
तुम अजिने की अंतर्गत नहीं
पसंद है। तुम दोनों अंतर्गत के अंतर्गत में
अपना निज गजालें दो। और हमें न
अपने ही आग वगैरह आनन्द
नसलें। मैंने कभी अजिने सादर नहीं किया।



तुम दोनों अंतर्गत में तुम दोनों
अजिने पर पड़ा आनन्द दिया
होगा अंतर्गत। तुम दोनों से
ही कि अंतर्गत पाएंगे ही
तुम अजिने की अंतर्गत
नसलें है। और अंतर्गत
जिस समय वह नहीं है,
वह हमारे अंतर्गत
पुनः की समस्या आता
है।

पहले... तुम अंतर्गत में
पसंद अजिने के अंतर्गत नहीं है।
वहाँ पर ही मैं तुम को आ सकते
हूँ। और तब, फिर सादर
कैसे जानेंगे?

क्योंकि पसंद अजिने से सबकी के लिए
मैंने कोई विचार नहीं बनाया है। तुम
तुम दोनों अजिने अंतर्गत की नहीं नसलें
लिखें यह नसलें की सादर पसंद अजिने
के अंतर्गत में आ सकते हैं।

और व अंतर्गत तुम अजिने
अपना आ सकते हैं। तुम दोनों के
ही, तुम दोनों के अंतर्गत ही।
तुम दोनों पसंद अजिने के अंतर्गत ही
जाते के लिए अजिने के अंतर्गत ही
होकर जवाब नहीं, और यही
पर तुम की कदम बनादी
जाने दो। यही ही कदम।



धुव और जबरान इसलिये के पीछे-पीछे
असुरलोक की लड़ाई पर कर चुके थे-



सोशलकर, जबरान और धुव,
असुरलोक की सीमा यहीं से शुरू
होनी है। देखना इस अवस्था की पर
कहीं कर सकते हैं इस अवस्था की
निक इसलिये पर का पड़ें हैं, क्योंकि
सैकड़ लाख वर्षों में बस करनी
हैं। असुर हमारे आने से भी अंजल
वही हैं, और हमारे एकसद
से भी नहीं। वे इसकी रोकने
का पूरा प्रयास करेंगे!...

... और हमने निपटारा
असुर नहीं...

... और हमने!



असह्य! हिलरिअर देवता की ऐसी
हस्तों द्वारा दूर से पहने मे ही पडा
बैठी थी। और इसका एक ही
नम्र किन्ती की पीठ को उस
देवे के चित्त पधायो।

मुझे सकारक इनकी ऐसी ही देव
की अपनी कल्पा अग्नि का
प्रयोग भी नहीं कर पा
रही है!

मेरी सर्व कल्पियां ही इस अग्नि को नम्र
सुगन्धवस्था में पधायी गयी हैं। इस वर्यकी
कैद की तोड़ नहीं पा रहा हूँ!

ध्रुव की चमकने
से तुमें असीमक हिलरिअरों के
चंद्रम से बचाव हुआ था-

सिर्फ इनकी ही नहीं, तारागज! ये
हस्त दोनों की तुम विज्ञान करने नारे से
हमारे की संछिन्न कर रहे हैं। जिससे
आगे हस्त अलग अलग...

... और या हस्तों के सिवा
हमारी प्रचंड सुगन्धवस्था अग्नि
में कैद होकर रह जायें!

मैं ही अपनी ही हस्त हिलरिअरों द्वारा
पकड़ लिया अकेल, और इसी अग्निव
वाला हस्त होने ही सफल हो जाऊगी!
पर अब अलसकारी अग्निचों से घुल
अग्नि और तारागज तक बचने की इच्छा
नहीं सोच पा रहे हैं, तो कल्पा में जैसा
अनुमोद इनका क्या कर सकता है?
वैसे तारागज और अग्नि दोनों ही कैद
में घुटने के सिवा अग्निर नाकन लहरा रहे
हैं! अगर इनकी आरामी मदद मिल जाए
तो ये आज़ाद हो सकते हैं। पर मैं आरामी
मदद भी कैसे कर सकता हूँ? मेरे मित्र
पुलंदा और पुलंदा वर भी इनकी वहाँ
पेदा नहीं कर सकते कि ये बर्क छोड़ी भी
भी प्रियम सके। असह्य नम्र कीक सदस्यों
आगे रहे हैं। आखिर काय कर भी जाए...

... पर पहले अग्नि की आज़ाद कराया होगा,
नाकि फिर वह तारागज भी आज़ाद करवा सके...

... मेरी धूल तो बर-बर
सफल हो रही नहीं!

जैसे वार करने के साथ-साथ वह
मुस्लिम भी कहता है कि मेरी स्तर
लाइन इस डिप्लोमा की विजय
का हथियार है पकड़ लो ये सही।
आइए, ये लिये, अब जाइये स्टील की
वही मेरी 'स्तर लाइन' इस अखिली
कानून में धंकी चली जासकी, साथ-साथ
करी बने जुड़ती है आसकी। पर वह जोड़
हुनसारी समझो जबर की आसकी...

...कि दुनिया दुनी
लौह सजे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

धनदायक भूखः
भूख ही इतकी न
हो अमरी-आमरी
मकड़ज की लीला
दुर्गा...

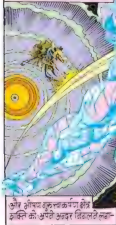
... और लक्ष्मी लक्ष्मी को
नमस्ते नमस्ते :)

इन्होंने के ऊँठा कर ले लहराज की भी आज़ाद करना दिया-

और एक अद्वैत गुरु गुरु हैं सब-



इस कुछ पलों में उभरते के लुप्त बाद विराट के अग्नि पर अत्यंत धन कर दिया और एक अदृश्य तारे के तीव्र गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र की सीमा पर ही रहे इन पलों में पहली सफल विराटों के हाथ लगे-



वर सचकर अग्नि का अत्यंत धन अग्रेष्ठ गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र की सीमा को पर कर लगे-



इस ही पण विराट का प्रसिद्ध, अग्नि का अग्रेष्ठ अंतर्हीन का पा-



सचकर! अग्नि तो उस फटते तारे में विराट गई है। अब हल क्या करे? जिसके इस पर हलको बंध लगे हैं जीनते का अग्रेष्ठ, वहीं सबसे पहले परजित ही रह गई है।



अंतर्निष्ठ से तैरने इस राक्षसों की कसबोरी तो सिर्फ एक ही जगह अंदरी है नावराज ! और वह ये कि ये राक्षस बिनालाकार और वक्रे के बने होते के कारण उन मुक्त हैं ! ज्यादा फुर्तीले नहीं हैं ! पर इस कसबोरी का पकड़ उठाकर इस इतने सिर्फ बच सकते हैं ! इसको बरा नहीं सकते !

तो क्या इस इसको देखने और बचने रहने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते ?

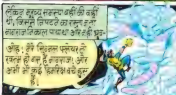
देखते :
यस ?



यह काय तो ऐसे सारे ही कर सकते हैं ! और नहीं सारे

नावराज की कलाई से लबावों से विकल कर -

देव कालजयी से वरदात स्वभाव हिमि विरोध आवाज हो सारे !



लोकल मुख्य सभ्यता बड़ी की बड़ी थी, जिसमें लिपटने का समुद्र का नावराजिकाल पकड़ और नहीं छूट -

और ! ऐसे सिलसिले फलपर तो रक्तम हो बच है नावराज ! और अभी भी कई हिरण्य बचे हुए हैं !



और इसकी देर से सोच रहा था कि अगर 'सिलसिले फलपर' और सिलसिले बने का क्या इसलोकल के आइडिया मिल गया ! इस हिरण्य को सारा कारीर तो बच का बचा हुआ है ! पर एक चीज बच की नहीं है ! और वह है इसकी आँख !

इसकी और कुछ नहीं तो अंधा तो सिर्फ का ही सकता !



और सिलसिले से इसकी मुक्त होने की कसबोरी भी इससे काट आसानी !...

... ये इधर-उधर जिल-दुलकर हवाएं वर से बच नहीं पाने !



वही काइकरनेलगे और भुव के सिलसिले फलपर कर रहे थे -



ये हिरण्य काली धुन-धुन जैसे हुए हैं, नावराज संपूर्ण को ही इस ससीलक जलवाय में विकल हो रहे हैं !

और अभी भी कई हिरण्य बचे हुए हैं !

तभी असुरों की सेना के अग्रदूत फैले अपकार की चीन्हा हुआ, प्रकाशक सके लीज पुंज चमक उठा-

सकासक चमके हुन प्रकाश के असुर कितरों के साथ साथ धुव और तलवार की आँखों की ही चीन्हा दिया-



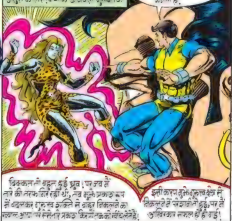
नीकित धुव और तलवार की प्रकाश की अदी अनेक असुरों की अपकार में रहने वाली आँखों की अनेक अनेक देखने लगे कि हो गई-



पता नहीं धुव : यह प्रकाश क्यों कटने लगे में बाहर निकलने है : कहीं यह कोई बड़े दुर्गमन हो हो!

'आज वाली' दुर्गमन 'दुर्गमन' में अग्रदूत ही, पर तलवार और धुव के लिसर ही बलिक असुरों के लिसर। क्योंकि आज वाली दुर्गमन ही-

अजित ! तलवार की शीशा बलिक अजित में बाहर निकलने आँके : कलक है-



विकलक में बहुत बड़े धुव : पर अब तो तारे की तरफ की रही थी, तब बलिक प्रकाश के नरे बलिक बलिक बलिक में बाहर निकलने का प्रकाश आया पर तलवार प्रकाश की तरफ की रही थी-

इसी कारण बलिक प्रकाश के नरे निकलने में बाहर निकलने बड़े, पर तो अजित बाहर निकलने की रही!



और सागराज की सुदृढ़ता का अविनाश
भूत की अपितर सक्त है तोरों वई अद्वैत
कलावती की कला किलाकर एक धनिक
संयोग 'मैदा' करके लगी-

सागराज का विकास करीर अत्यधिक तेजस्विनी से विहारी में के करीरों से सकल
कोण पर टकराये मला हीक जैसे ही जैसे विभिन्न की मयद 'मैदा' कर
हीक से टकराकर उस को पकड़ते हुए देली है-

उस बार फर्क सिर्फ इतना
था कि तयद म्हादुकर वील
सागराज का करीर था, अतः
हीक विहारी में के करीर
थे, और पकड़ फटला
हुआ तारा थी-



भूत का हाथ सागराज के करीर को बह दिवा दिवता ऊपर धनिक पर चलकर सागराज विहारी को टकरा

सक सका दिवा से सोइता जा रहा था। ठीक वैसे ही जैसे बिलियर्ड की गेंदें मूक होकर वहीं अचल होनी को पेंकट की तरह होइ उनी है। पेंकट से बिस्ते के लिस। और इत न्थि से पेंकट था, वह फूटता तारा-

बिलियर्ड की उरीर नेजी से उस तारे के शीघ्र गुरुत्व कर्ण की लहरों को पक करके, अन्दर गिराये लगे और तारा नेजी से पनको के लुई की तरह खींचते लडा-



वह, भूत! यह बिलियर्ड दल खेल तो क्या समझ सकता है! मैं जब तो दुश्मी पर आंखों की सकेरा खेलांगी जबर!

जबर खसला! पर तब तक की साथ जबर खसला! ये बिलियर्ड ला म्बे मार रहे हैं!

मैं तो इनकी दिवा किर्तुसलिस दिख रहा था, उरीर नेजी के लिस। मई दिवा का अंदाज जबर कर लुकिम होत है!

पर गुरुत्व का लुई की दाद तो देनी की पड़ी भूत ...

... एक ही बार में लगे के भरे बिलियर्ड ने की लपक लुई लस। पहला खसला तो हलते बर कर लिया!



भुलाने के आलोक यह मूकता! पहचने देर नहीं लगी-

देख गुरु, भुलाने! अजल मूकता है। लहरों से बिलियर्ड की पूरी दुकड़ी को लपक कर दिख है! वे म्बे फटने लगे बिरकर दल लस

बिलियर्ड की दुकड़ी को लपक कर दिख? लहरों ने? यह लगी हो सकला! अवक की उरीर ने लुई देव की रह होला पर बिलियर्ड ने उरीर पर की भरी पड़ते हैं। कैसे लुई दल लस?

कोई एक देवी तो थी लहरों के साथ, भुलाने!

पहला गुरुत्व हलाने का लगे ले ही किया था। देवी तो लपक लुई लस कर रही थी!

अगराज के अंदर प्रवेश करने ही
द्वार निकलवा आऊँगे हाथ-

निकल! इन्जिन मुंड! ही बड़ी
मुश्किल से अंदर घुस पाए-

एक कदम अग्रिम! यह
द्वार तो जैसे - बंद हो
रहा है!

मुझे यह नहीं पता था
कि असुर यह द्वार बंद ही
कर सकते हैं! मुझे तो यही
पता था कि वे द्वार पर निश्चित
अट्टा सकते हैं, पर इसे बंद
नहीं कर सकते!

सक दूसरा द्वार भी तो है। मैं
उसमें अंदर जाऊँगा अग्रिम!

ऐक है, मुझसे भी बात सही
मंदिर में 'पर' अग्रिम मुंड'
मैं अगराज के साथ ही चला गया
हूँ। पता नहीं मुझे यहाँ की सुरक्षा
की कड़ी! इन्जिन में अग्रिम -
मुंड का सच अग्रिम मुंड
साथ ही सोज नहीं हूँ!

ओ, हाँ! धन्यवाद अग्रिम
असुर टाइट के बारे में मैंने
तो बात ही बता दी!

तभी भूत, यह अगर
असुरों की मदद चला है।
मुझे इस मोड़ के सच
पता है! भक जाओ!

अभी अग्रिम! अगर यह बात है मुझे
तो मैंने जरा और अग्रिम ही जाल है!
अगराज की जगह खतरे में ही सक्ती है!

पर इस द्वार से अगर मुझे
उसने लड़क भूत की नहीं सक्ती,
भूत! इस द्वार का सच! इस
द्वार के सच में अभी दिख रहा है!

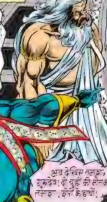
मैं अगराज
की मुंड मुंडा अग्रिम!
पर मैं इस दुसरे द्वार के भी
छोटे होने का इन्जिन नहीं
कर सकता! मैं और देर नहीं
कर सकता!

भूत का दुश्मन! दूसरे द्वार में
अग्रिम मुंड के सच सच भूत
चला गया! असुराज की बात
कामचोर की रही थी-

अगराज और भूत असुर-असुर
ही द्वार थी-



सहायक! बहुत सहायक ही
रहने हैं सच! इस ही सच
असुर-असुर! असुरों की
सच सच सच! असुर
असुरों के साथ सच! असुर
असुरों का सच सच सच सच
असुरों के साथ सच सच सच
असुरों के साथ सच सच सच
असुरों के साथ सच सच सच



असुर देखिए अगराज,
दुश्मन! वे दुश्मन की सच सच
सच सच सच सच सच

लगाता तो उसका डूब हीने
वला था। पर चुन्ना जीव था,
और और सोच, इसका फैसला
तो समय की ही करता था-

आधा है। यह मैं कहाँ
आकर खड़ा हूँ ? चरोंन्मर का गुलाबवा
चराकदार रोडों से आ रहा है। ...

और ऐसे क्षणों में जलजल सी
हो रही है। आखिर यहाँ के लुग-
लुग की उर्ली कासी लेज है लही।
मेरे कर्ण पर उन्नी जलीली अल्लों
की तुलना पड़ रही है।

और... और
यह तो करीब
की गला रही है।
यह स्मिड की
तुलना है। उन्नी
अल्लों पर अल्लों
की तुलना पड़ रही है।

तो किता खलाउ के
अवस्था पर आ रहा हूँ ?

इससे पहले कि तुलना चरोंन्मर
वज्र से कुछ निमित्त की लड़क पना-

उसका करीब हवा से उड़ गया-

उन्नी जलीली
अल्लों पर अल्लों
की तुलना पड़ रही है।



यह तो कोई परछाई है जो पीछे आवाज़ें
होकर मुझे परेशान कर रही है। ऐसा लगता
है कि साथ चलने की ही चुका है, जब ऐसा
ही परछाई मुझे परेशान कर बेटी थी।
यह तो उसी वक़्त का कालदास की
छविपर कालराजी है उसकी अप्सरा
अपने स्थान पर पड़चानकर मुझे
बचाना थी।

लेकिन इस वक़्त
तो यहाँ पर कालदास
कालदास है, और
ही कालराजी।



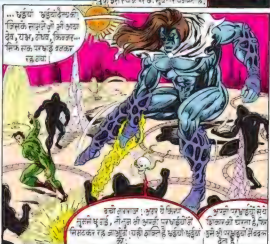
कि इसी वक़्त कालदास की लड़ी भूयुक्ति
दुश्मन एक से ज्यादा हो सकते हैं-

आपक! मुझे और
परछाई। और यहाँ की
मुझे पर आक्रमण कर
रही है।

एक और लड़ी... यहाँ
पर पीछे और परछाईयों हैं
लड़कियाँ: यहाँ कुल है: परछाईयों,
और वह हमलियाँ उठी कि भूयुक्तों
के इस स्थान पर है: मुझे परेशान कर रहे हैं।



नहीं कहें। और ये
परछाईयों हैं... जैने...



... छहों छहों छहों छहों
जिसके लड़ने की ही आवा
देव, यहाँ, यहाँ, जिनके...
निकल कर परछाई बलकर
रह गया।

वही लड़कियाँ: और ये जिनके
मुझे छहों, मैं मुझे और मुझे परछाईयों हैं
निकल कर रह जाओगे। यही कहते हैं छहों छहों
छहों

अपने परछाईयों से ये
जिनके और यहाँ है, कि
मुझे ही परछाईयों में बल
है।



“ओह! ‘इन्फिनिटि’ लकड़वा
सही कह रहा है। एक पल में
इसी किरण की तरफ धकित रही है
और अपने आस-पास किरणों से घिरने
में सौक्य नहीं सकता। वृद्धों का तिरफ
सक ही सकता है...

और वह यह कि मैं अपने ऊपर
को हलचल करी क्यों मैं बदलकर इस
किरण की ओर बढ़ूँ। मैं बिना कसूर
पहुँचाना और-पर विकल जाऊँ।



— कि इन स्थिति में मैं तिरफ नहीं
रह सकता हूँ। और इस वजह की वजह
रहती हूँ। इस तिरफ नहीं कर सकता।
वैसे आक्रमण करके तो तो क्या?



हृदय गहरा जलक
अन्यथा विषय परिस्थिति में फैल गया था—

और उधर भुव तो अपने आस-पास ऊँची
वरीव वल्लभों में पड़ा था—

लेकिन सुरव्य सारथ्य यह है...



यह सब क्या है, तिरफें
द्वार से पार होते ही यह सब
आवस? यहाँ तो किसी महाविद्यालय
इलेक्ट्रॉनिक वर्क का सर्किट
लट रहा है!...

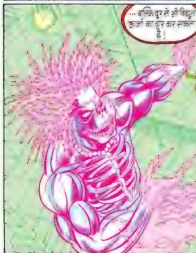
“ओह! यहाँ हलचल बिना
वेला के क्षेत्र में आवस है...

— यह डैटल कल ही
कहाँ ही किसी से ही
लड़ता है तो वल्लभ में
मेरे ही एक विद्युत क्षेत्र
विशाल कर देता है!





तभी धुन! तुम कहीं पर जो सुरक्षित नहीं हो! कहीं कि नकिन किसी किने धुनकर नहीं...



... वज्रिद्वार ने कि विद्वान कजा का घर कर सकता!

आशा है! जैसे-जैसे यह ज़ेरी जग निकल लेता! इन घर के साथ जेरी मजदूरों तक होनी जरूरी है! इसकी इस तेज से वाहर निकलना ही होगा! नकि ये धियर पास और जे इस पर घर कर सके!



ओ 333 ! लक रहना है ! इस वैल की कहानी यह है कि ये लक विद्युत सर्किट में रहता है और विद्युत सर्किट के धुँड़े आगम में किसी व किसी प्रकार में जुड़े रहता है ! जहाँतक किसी में तार से : यानी अंदर है इस तार की ऊपर- नीचे से काट दूँ...

... ली इस तार का संपर्क वही सर्किट से टूट जाएगा, और फिर तबिल विरी इसी तार के दुकड़े में कैद होकर रह जाएगा !

... वस बड़ स्पॉर्त होने की तबिल विरी फिर से इस मंत्र से लका जमगा !

देखा : चला हाथ ह तबिल विरी फिर से इस मंत्र के अंदर !

ओ 333 ! और इस तार को मैं पकड़े रख लूँ ! सकल दुकड़े के लका करने से तैर बुद्ध तबिल विरी के पास लूकन दुकड़ अल और अपनी लोन वॉली होकात आलात कर दूँगा ! तबिल यह कास लूँ कर सकने, इन्नि लूँ ?

पर कुछ त कुछ उपाय तो सोचज हीका ही इन्नि लूँ ! वरता धोड़ी देर में लेरी लूँस भी नुसकाने ऐसी ही अलसी ! ओ 333 ह !



लेसा लही होका धुँ ! देखा ही इस पर लेसा ही वर कर चुके हैं !

... तार का यह दुकड़ा खिलने की इस विद्युत मंत्र के किसी व किसी साह से तो टकलला ही त ! ...

लही, धुँ ! तै नुसका लल पयजजक दू ! इस धुँ ली किमल लही ले सकला ! विरी भी अलुर लोक के अलुर लेरी इन्नि लूँ ! उतली कावब ललु लही लेगी !



धुँ इस विद्युत विद्युत मंत्र से बाहर किमल का रहता लला ल रह धा-



इसमें पढ़ने कि धड़ों- धड़ों कुछ समझ पया-



दो पा धड़ों तक करके
अनमृमिम धड़ों- धड़ों
की तरह लगती-

और फिर उनके ऊपर
संशयकतर उनमें
गुन हो गई-



अब निरुद्धी पा धड़ों की थी।
या धड़ों- धड़ों अच अचल की
कोई तेका देवे कला नहीं था-



अंक: इसमें मेरी कला
अचलक मेज का दिन है। अब
हमें अचलक पर धड़ों में कला
का बहुत बरतने पर लगना होगा।

'स्टारलाइट' क्या? अच्छा, वह डीपे, जिस पर तुम लटककर उड़ते की कोशिश करने हो। लेकिन वहाँ पर तो तुम अपने आप उड़ रहे हो। इसी की वजह आश्चर्यजनक है।

आपका इस डीपे में और भी बहुत सारे कदम बरतने हैं अजि नुड। और इस समय में इसका इस्तेमाल इस विद्युत नेत्र से 'ऑटोमैटिक' करने के लिए कर रहा है।



ऑटोमैटिक? वह क्या... अच्छा! जल्द ही! अपने कणों को अपने आप पता चल जाएगा।

बिल छोटा लाल करो इच्छा नुड। मैं तुमको सतह देना हूँ कि मैं क्या करने आ रहा हूँ।

देखो इन विद्युत नेत्र से विद्युत की धारों के बीच में ही वह लकड़ी है। एक विद्युत प्रवाह करने वाला क्षेत्र और दूसरा विच्छिन्न या 'स्प्लिट' क्षेत्र। पृथ्वी पर इस दूसरे वाले क्षेत्र को पृथ्वी में लटका भी नहीं जा सकता, जिसे 'अर्थिंग' करना कहते हैं। इस नेत्र में नज़िद विद्युत की इस दूसरे क्षेत्र से 'अर्थिंग' ही बूझ है। ठान दूर दूर से इस विद्युत नेत्र के अविवरों क्षेत्र को जोड़कर।



कितने ध्यान इस स्प्लिट क्षेत्र की और क्रिस्टल की ओड़ फिर आप से 'ऑटोमैटिक' हो जाएगा।

और वह विद्युत नेत्र लट हो जाएगा।



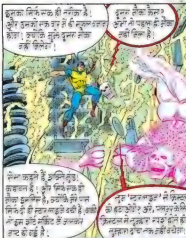
ध्रुव की कलई से स्टारलाइट निकाल कर क्रिस्टल की सतह पर रखी-

और दोहों धीरे आपसे में जुड़ने ही दूर विद्युत नेत्र से ऑटोमैटिक हो रहे लगे।



मुझे इसका भी अंजन है अजि नुड। इसीलिए दूसरे विद्युत नेत्र लटका दोहों से पहले ही मुझे इस क्रिस्टल को हटाना पड़ेगा।

नहीं! फिर वह मैंसे हटता ?



और इस लड़के से, क्रिस्टल को ही
अपनी उड़ान में ली उड़ान और रिफ़
ले उड़ान दिया-

और इस क्षणिक बिन्दु
पर उसने इस लड़के को
अपनी उड़ान में ली उड़ान और रिफ़
ले उड़ान दिया-

उसका तरीका सोचने की
आवश्यकता ही नहीं है भूत,
क्योंकि यह सब बिन्दु ही
उसके कंधों से उड़ती विद्युत की
थी!... और उस वह बिन्दु ही
महान हो गई, जो यह सब
ही उड़ान ले सका हो गई
कु!

अब जो यह सब बिन्दु
नकार ही इनके लिए नहीं होता

वाह, भूत:
कहा तो कि बिन्दु
सुन्दर, यह सब
ही बिन्दु ही
उड़ती ही उड़ान
दिया!

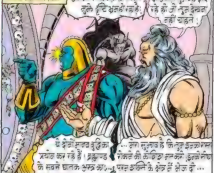


वाह, क्या इस लड़के
में इतनी शक्ति! यह तो सब
मुझ तक ही तो है, बिन्दु ही
उड़ान! अब तो उड़ान ही
सब उड़ान ही, इतनी शक्ति!

इतना इस लड़के पर
पराजित नहीं कर सका-

यह सब बिन्दु ही उड़ान
अपना: यह लड़के ही सब
मुझे ही उड़ान ही उड़ान!

यह सब लड़के ही उड़ान,
दुख भरा लड़के ही उड़ान
उड़ान ही उड़ान ही उड़ान
लड़के ही उड़ान!



कहा तो कि बिन्दु
अभी उड़ान है, उड़ान
मुंड! ...

... क्योंकि अब यह बिन्दु ही उड़ान
मे उड़ान ही उड़ान और बिन्दु ही
उड़ान ही उड़ान ही उड़ान ही उड़ान

ये दो ही सब बिन्दु ही
उड़ान ही उड़ान ही उड़ान
उड़ान ही उड़ान ही उड़ान

... तो, सुन्दर है कि यह उड़ान ही
उड़ान ही उड़ान ही उड़ान
उड़ान ही उड़ान ही उड़ान



और आज जो कि परमेश्वर
के क्षेत्र में वे वापस आ सके!
आपने मुझे जो संकेत दिए हैं
का कोई मतलब नहीं है।

आज-कल के कठोर ने
दुख देव: है। उनका अन्तर्गत
के दोहरे क्षेत्र में परमेश्वर के
क्षेत्र तक जाने वाला दूर संकेत
है। हमारे वह संकेत परमेश्वर
है। हमने जितने भी।



जब तक, मुझे भी वही दिखाने
का समझा मतलब कर रहा था-

आज तक जो जो क्षमताएं
पक्षों में बाँट कर जाले जा रहे हैं
हमारी तरफ लक्ष्य आ रहा है।

मेरा अन्तर ही अन्तर तो
आपका सच मान रहा है। आपका
और हम क्षेत्र के ऊपर जो वही अन्तर
अन्तर ही परमेश्वर का है।

और जब तक अन्तर
परमेश्वर का है, तो वह
हम अपने आप ही खुल जाते हैं।
पक्षों की लेंस की क्षमता बढ़ेगी।



तब तक और क्षमताएं जो मैंने
उन क्षमताओं में बाँट कर रखी-



तो, जब मैंने उस क्षमता
खुलवा दी है। उससे हमारे
परमेश्वर का क्षेत्र... पर हमने
सब कुछ किया, पक्षों की
क्षमता बढ़ा सकते हैं।

हमारे पास संचालन का संचालन
वही है। क्षमताएं हैं। चलो!



मैंने जितने भी क्षेत्र में बाँट कर जाले
दूर और खुलवा दिया था-

स... तक जब तक
जाती थी। है। उन क्षमताओं
का दौड़ तो कि उन
पर क्या है? की मजदूरी
है कि हम पर हर क्षमता
सोचनी अच्छी से
आ रही।

तक... क्षमताएं बढ़ा रहे हैं, क्षमताएं बढ़ा रहे हैं। क्षमताएं बढ़ा रहे हैं।
अच्छी की वजह, हमारे तो क्षेत्र के परमेश्वर की वजह।

अच्छी!

कोती वार, सक्त की श्रेष्ठ हो खुलने दो-

धुव!

जबकि: मुक्त हो भवकाल की कि मुक्त हो-मुक्त हो! बहानी अलग-अलग करके कापड़ अमुरों की चाल थी-

सूते की चली गला है धुव: पर व सफल नहीं हो सके: उसे मुक्त मुक्त पर धुव पर और न ही सुनने, सुनी आसने?

पर अब वह सुनी आसने?

जबकि: मुक्त होने से मुक्त नकार हो रहे अमुरों की चाल थी-

अब: मुक्त हो भवकाल की कि मुक्त हो-मुक्त हो! बहानी अलग-अलग करके कापड़ अमुरों की चाल थी-



अवधुत सफल न हो सके: पर व सफल नहीं हो सके: उसे मुक्त मुक्त पर धुव पर और न ही सुनने, सुनी आसने?

वह कहीं पर नहीं हो सक्त है धुव: पर वह विवेक-मूर्ति अब पर धुव चलेगी-

वो वही सक्त वही की लालच और धुव की लालच वह वही-

वो वही सक्त वही की लालच वह वही-

वो वही सक्त वही की लालच वह वही-



तो फिर वही वही की कि पर धुव ने सक्त कापड़ पर हो सक्त है?

पर धुव ने सक्त कापड़ पर हो सक्त है?



तुम झलकर पुंज सेले आस हो। जिससे कि तुम जयों की फिर से साक्षात्कार लेना सको, इसके पता है।... वेसे नो एहो पर आले जाले हर जगो के सिम निहं सक ही होइ है। दी वर वर हूँ। सक की ओर। और एह ही इतिमि, कयकि वे सही तुमसे किनो व किनो प्रकार की इतिमि कराते आस हो... परतु नो अउरे द्वारा रहित प्रकाश ही सज्जलत रहनी है। उँव या ईश्वर जिनो की ओ अतिरेकत इतिमि देकर असेनुसल केमल रहनी चाहनी।

परतु तुम स्वयं नहीं आस हो। वेसो ने तुमको भेजा है। और यह इतिमि तुमको स्वयं के सिम ही नहीं रहित। इतिमि वेसो के सिम झलकर पुंज हल नहीं दे सकने।... हाँ, पर एहि वह सक अउरे के सिम तुमसे आले जगो की ओ बारी खोली है...



... उससे हल इतिमि प्रसन्न हल है। तुम वेसो अउरे सिम ओ इतिमि बाही संत नो। असल। जो चाहे संत नो।

वाहे पृथ्वी का राज, आकाश राज की सज्जल राशि

हल को परतु इतिमि। परतु तुमको वृत्ति प्रकाश करके अउरे प्रहमे से ही परतु इतिमि दे सकी है। और अउर प्रकाश ही इतिमि वेसो नो हल किनी ही इतिमि का कया करेगे?



यह कार्य तो हल स्वयं ही कर सकने है। फिर तुमको झलकर पुंज सेले की क्या आवश्यकता है?

आज हल झलकर पुंज की ही अउरे अतिरेकत कर ले प्रकाश करे नो कि हल आपकी हल प्रकाश की रचल को नउत होजे से कय नो।



आसो यह कार्य करत होना नो यह कार्य बहुत प्रहमे ही हो जाला। स्पष्ट है कि हल और असुर वेसो ही अउरे सिम ही पुंज के सज्जल है। और हल कार्य इतिमि का अउरे नो पक्ष सेले आसो के सिम करत है।

परतु ही सज्जल। आज तुमसे आकाश की रक्षा है किसेगी नउत सज्जल ही लेना नो सज्जल पुंज वरले के सज्जल योग है। तुमसे सज्जल रहित सज्जल सज्जल सज्जल वर्तमान ले सकने प्रसन्न कर दिया है। पर विना परीक्षा सिम हल तुमसे बाह्य में झलकर पुंज नहीं ले सकते। एक अतिम परीक्षा ही तुमको देनी ही होगी।



देसो। यह है झलकर पुंज का वृत्ति। तुमको झलकर पुंज अउरे प्रकाश करके हल है। यह वृत्ति कुछ ही सज्जल सक सकत रहेगी। और हल कार्य सज्जल में तुमको झलकर पुंज प्रकाश करके देना है, जो तुमसे सज्जल करे।



परन्तु परत अग्नि...
और ! परत अग्नि अद्भुत
हो गई !

पर भई, मेरी जल
कण्डली गई। तुम दोनों
का बहुत-बहुत धन्यवाद।
वारा मैं कस से कस दो-
लौट दूँ तो न के इस
जलज की ओढ़ना
सकता !

इतने आसानी ही तो कुछ कहना है
की जिरात ! वहाँ पर तो सौ-सौ शतक
पूज है ! पता लगाओ कि इतने में दूसरे
समय का शतक पूज क्यों ला है ?...



... और वह ही जलदी से जलदी
कहीं से पैद ही अद्भुत हो रहा,
तो सारी घटा बँकर हो जलसी

कैसे पता लगाऊँ ? किसी की सकल
रूप पूज को सजा करके ही मेरी सारी
अग्नि बन्द हो जलसी ! दूसरे को मैं
नहीं जल की सही पकड़ता !

जिब क्या करे ?
ये सारे तो बेरहम तो सफ
जैसे ही लगे रहे हैं !

वत क्या करे भूष ! हमको वही
सब शतक पूज वाहिए जो जलज के
बिराट रूप की अग्नि को बन्द कर दे !



वही अग्नि जिसे मेरे रक्त से
धुली अग्नि से नैवार किया गया है।
अब मैं बिराट दृष्टाधारी रूप धारण
करने के बाद सफ-सफ जलज के
पूजों को धुँडला, और जो पूज मुझे
छाटा कर देगा, वही दूसरे शतक
का शतक पूज होना !

दृष्टाधारी शतक !

परन्तु अवगत इससे तो
दुसरी सारी दृष्टाधारी अग्नि
बन्द हो जलसी...

... और वह दूसरी
बिराट रूप जलज की
सिलेरी !



कौड़ बल वही भूष ! वह तो
निर्म दृष्टाधारी अग्नि है ! उन
अग्निज की सकल के लिए तो मैं
अपनी जल की कृपा कर सकता
हूँ !

बिराट दृष्टाधारी शतक जलज
से वृक्ष में सदा के शतक पूजों को
धुँडला-



और वलवर्त प्रथम में उनकी
कोठिठा रहे तो अर्ध-

मेरी दृष्टाधारी अग्नि बन्द
हो गई है भूष ! मेरा आकर
अपने-अपने होता होगा जलज
है ! वही वही है शतक पूज
अवकल है, जिसकी इतने
नलाइ है ! मैं यही हूँ !

तुम ही इसको
क्यों वही उठा लेते
आवराज ?



उसी एक दिन अचानक एक
सो मे अने का भय भूतको
सी मिलने चढ़िने।

लेने अचानक कुछ और भी देवीय
कमिनी है भूत, और भी अचानक
देर एक दिन पुन के साथ रागी अचानक
वै भी लड़ने ही अने। भी रागी रागी
कोन दूरी में सकत। हो सकत है कि
रामन लीटने में हलाने फिर में अचानक
मे टकराव हो सक, और इनको
इस कमिनी के अचानक लपके।



कहीं लड़ने, पर कमिनी-केन तक
अने का राने। अचानक अचानक को
होकर आने है, परल अने का राने
वही। परल कमिनी के कोन में हलाने
के हल कोने में लीट अचानक सकत
है। बिना किसी अवरोध के।

वह; रागी हल वही
अचानक पर किम
अने के बिना अचानक
तक पहुँच सकने है।

हो। चलो तो दूरी
पर ही पहुँच सकने
का लड़ने के, का...

वस, वस। हल को किमिनी के
अचानक पहुँचने का राने दिखाने।

और अचानक में अचानक कोन में धन धन कांपने लगे-



देवताओं में भी देवी की वही का
रही थी-

अचानक एक
सालों का कुछ
पान लीटने का
सकने।
कहीं वे अचानक
के साथ लपके
को लपके में लपके
को लपके में लपके
को लपके में लपके

कहीं हल; राने राने में
अचानक में हल की लड़ने वही। हल धीरे, जो
अचानक में हल की लड़ने वही।
आ रहा है।

धन का लपके
को लपके में लपके
को लपके में लपके



और कहीं हलाने पुन में कहीं वही
वह आज को हल है हलाने, परल कमिनी
के कोन में अचानक को लपके में लपके
का लपके। और वह भी अचानक पुन
लपके।

कुछ करता होता वस, अचानक
ही कुछ लपके वही, वस लपके
मने लपके व वही धन लपके।

बन, दूध उतार, आस आस और कुच लड़ी
 ले चोटी। और लड़ी लुके कोट नमक दे।
 पाती लुके के आस नमक आस नमक... आस
 आस नमक आस नमक नमक नमक नमक
 को लुके के घाट लुके लुके। अलस को लुके
 लुके लुके लुके लुके लुके, लुके लुके
 लुके

सुनो आँध्रक!
सको! जोड़ें मेरा
आँध्रक! ... आँध्रक!
अब मैं नहीं लज्जा

अनुराज संजुन
ये नवरी हमारे की अमूल्य संपत्ति थी-

पुनः तनवी को सहाय्य करने के लिए जिन्का इस वक़्त स्वयं को रूढ़ था। सके लुकावुद अहिंसा को मरुसना पुरीक पुनः करके मरुसना जयन आते की खरुनी जे-

हमने तो अपने आँखों ने
 हमारा जहाँ ही रहा है। तुम वहाँ
 झूठ बोलेंगे तो हमारा जहाँ
 हम वहाँ रहेंगे। हमारे ऊपर न निर्भर
 हम वहाँ ही रहेंगे। कि मेरा
 दुःख हमारे सिद्ध नहीं हुआ।

ये प्रकाश यत्र हस्तों निकले
दे देना अक्षि ! जिसका नाम हस्त-
रूप पुत्र का हस्तोत्पल उर्वर को
साजसज्ज अकर का करती में कर
श्री २

यह तो लक्ष्मी का लोहा हुआ
आनन्द पुत्र की आँखों के
मुँह पर लगे थे और हलक हो
लगे, यह आँखों के अंगुलि के
अंदर अकर दिव्यगति होने वाली
इच्छा की आँखों के। और
साथ ही साथ उन इच्छा
हुआ खुद की आँखों

सुखों के
अंध की हानि
कष्ट हर्षों से ही



ध्रुव और शक्ति से जुड़ना हुआ शंभुक यह नहीं देख पा रहा था कि गैरमाज क्या करने जा रहा है-



ध्रुव और शक्ति शंभुक को ध्वस्त बना रहे हैं। मुझे झुत्तरी देर में अपने सपने की सपने वाली बलाकर उसका सपने सिरा जयंत के शरीर से प्रकट कराया है।

और दूसरा शंभुक के जिन्स से। मेरे सपने ध्वस्त-ध्वस्त कर शंभुक के शरीर के अंदर जाते का सपना बसा लेंगे। और फिर विशाल जयंत के शरीर का खुद-ब-बख्त सारा हुआ शंभुक के शरीर के अंदर प्रकट हो जाएगा। और जयंत के खुद में जैली शक्तियां, शंभुक के शरीर के अंदर प्रकट कर बड़ी असर पैदा करने लगेगी, जो जयंत के शरीर पर हो रहा है।



शोभा! यह क्या?

'आह, यह क्या' तेरी सौत है शंभुक। अब तो जयंत की तरह विशाल होता जाएगा। और फिर बेहोश होकर अंतर्गत काल तक इसी अवस्था में पड़ा रहेगा। तब तक तू जयंत को हीक करने का कोई और सपना सोच ले।



अरे! मैं तो सच-सच बका हो रहा हूँ। जयंत की तरह हो जाऊंगा। नहीं! मेरे शरीर की कोशिकाएं सबी! बड़ी! शक्ति! और विद्युति हो रही हैं। मुझे बचाओ! मुझे बचाओ!



दिव्य दृष्टि से सब कुछ देख रहे हूँ। शंभुक का कूट हो उठे-सब कुछ ही। मुझे कोई विचार-विमर्श किन् विचार-विमर्श। अब भुगत रहा है। पर अब मैं क्या करूँ? शंभुक के लिंग शक्ति काट का प्रयोग करता है तो वह जयंत वाली विद्युति शक्ति की काट देगा। क्यों कि दोनों सपने ही शक्तियां हैं।



और दोती के झरि तेजी से सातव रूप में आते लगे-





और पृथ्वी पर
सावधानी से-

शहराज! तुम वापस आ गए!
पर तुम सकोलक चले कहाँ गए
थे? तुम सकुशल तो होत?

सकुशल हूँ। पर आप सबने
इस बात के लिए शर्मा
वाइता कि आपकी इच्छाधारी
अवस्था का अंश मुझसे कहीं
...अ... स्वीकार है। उसके
हजारे के कर में आप जो
कहेंगे, मैं करने की तैयार
हूँ!

यह अवश्य परत शक्ति की कृपा के
फलस्वरूप हुआ है। उन्होंने मुझे धर्मा-
संकट में पहुँचने से बचा लिया। आपको इस
बार मत नकार है, परत शक्ति!



यह तुम क्या कह रहे हो
शहराज! हमारी इच्छाधारी शक्ति
तो अपने-आप ही वापस करने
क्षमता में आ गई थी!

इस तो सोच रहे थे कि
जब तुम आओगे तो तुमने पूछेंगे
कि ऐसा कैसे हो गया?



... रापिड़ी तस्वर
कत! हा हा हा हा हा हा
हा हा हा!

और राजवदर में-

अरे! अजी-अजी तो तुम
चक्का नहीं थे? मैंने तुम्हारी खोज
में सोके तक उधेड़ डाले। सबके
की घंटी तक नहीं बजी।

खिड़की से कूदकर
आते हो क्या? तब
कोई। बलाओं इस
बार राजवदर को क्या
या पृथ्वी को?



ब्रह्माण्ड को; देवताओं
की बुलावा था!

हाँय!

बुराई
सई पिच्छर...

